Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान

वनपाल - वनरक्षक

Rajasthan Subordinate & Ministerial Services Selection Board

भाग – 2

राजस्थान का सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

राजस्थान वनपाल – वनरक्षक

CONTENTS

राजस्थान का भूगोल		
1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	7
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	19
4.	राजस्थान की झीलें	27
5.	राजस्थान की जलवायु	32
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	39
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	44
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	49
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	58
10.	राजस्थान में पशुधन	67
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	71
12.	राजस्थान की जनसंख्या	81
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	84
14.	राजस्थान में उद्योग	88
15.	राजस्थान में सूखा, अकाल व मरुस्थलीकरण	92
राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति		
1.	प्राचीन राजस्थान का इतिहास	95
	• परिचय	95
	• प्राचीन सभ्याताएँ	98
	• महाजनपद काल	102
	• मौर्यकाल	103
	• मौर्योत्तर काल	103

	• गुप्तकाल	103
	• गुप्तोत्तर काल	104
2.	मध्यकाल राजस्थान का इतिहास	105
	• प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ	
	• राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ	
3.	आधुनिक राजस्थान का इतिहास	147
	• 1857 की क्रांति	147
	• प्रमुख किसान आन्दोलन	149
	• प्रमुख जनजातीय आन्दोलन	153
	• प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन	154
	• राजस्थान का एकीकरण	158
4.	राजस्थान कला एवं संस्कृति	163
	• राजस्थान के त्यौहार	163
	• राजस्थान के लोक देवता	169
	• राजस्थान की लोक देवियाँ	174
	• राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय	178
	• राजस्थान के लोकगीत	184
	• राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ	185
	• राजस्थान के संगीत	186
	• राजस्थान के लोक नृत्य	187
	• राजस्थान के लोकनाट्य	191
	• राजस्थान की जनजातियाँ	194
	• राजस्थान की चित्रकला	197
	• राजस्थान की हस्तकलाएँ	203
	• राजस्थान का साहित्य	206
	• राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ	212
	• राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र	214
5.	राजस्थान की स्थापत्य कला	219
	• किले एवं स्मारक	219
	• राजस्थान के धार्मिक स्थल	228

	• राजस्थान की सामाजिक प्रथाएँ एवं रीति–रिवाज	233
	• राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	235
	• वेश–भूषा व आभूषण	239

राजस्थान में वन-संसाधन एवं वनस्पति

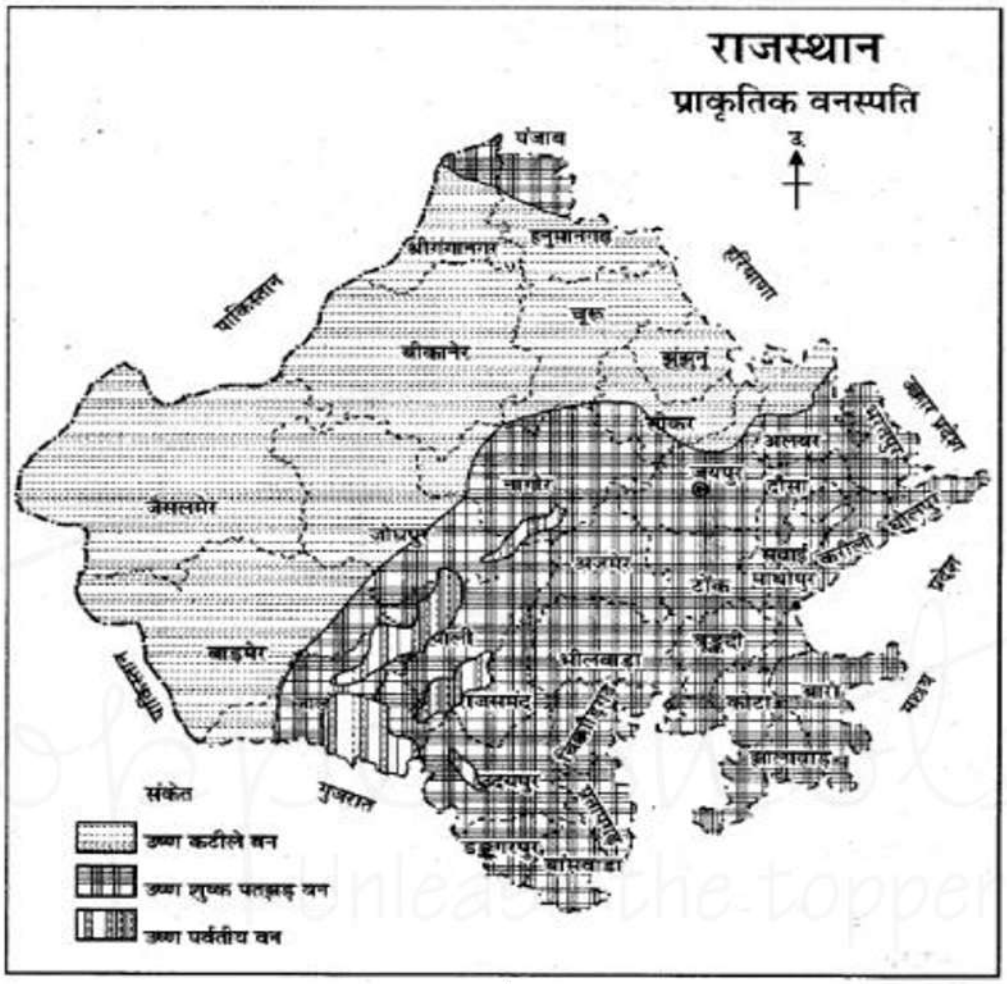

भूमिका

वन संसाधन एवं वनस्पति प्रकृति का महत्वपुर्ण उपहार है यह भौगोलिक तत्व है । जिसका प्रभाव जलवायु मृदा आदि पर प्रत्यक्ष रूप से होता है । यह मानवीय क्रियाओं को भी प्रभावित करता है । मानव इनसे अनेक प्रकार की वस्तुएं प्राप्त करता है । वनों को हरा सोना एवं जीवन रक्षक कवच भी कहा जाता है । वन पर्यावरण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है । क्योंकि वन जलवायु को नियंत्रित करते है । मृदा को संरक्षित करते है । और पर्यावरण प्रदूषण का नियंत्रित करते है ।

राज्य में वनों का विस्तार सीमित है और उनका विनाश भी तीव्र गति से हो रहा है ।

राष्ट्रीय वन नीति के अन्तर्गत वनों का क्षेत्र 33.33 प्रतिशत होना चाहिए लेकिन राजस्थान में भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार 9.60 प्रतिश है । यह भारत के वन क्षेत्र का 4.28 प्रतिश है ।

राजस्थान में 31 मार्च 2020 तक 32862.50 वर्ग किमी क्षेत्र में वनों का विस्तार है । इसमें 37.32 प्रतिशत आरक्षित, 56.29 प्रतिशत सुरक्षित वन तथा 6.39 प्रतिशत अवर्गीकरण वन सम्मलित है ।

प्रशासनिक आधार पर वर्गीकरण

स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट (2019-20) के अनुसार

1. आरक्षित संरक्षित वन
   12252.28 वर्ग किमी (37.30%)
2. सुरक्षित/रक्षित वन
   18494०97 वर्ग किमी (56.31%)
3. अवर्गीकृत वन
   2098.05 वर्ग किमी (6.39%)

जलवायु के आधार पर राजस्थान के वनों का वर्गीकरण

जलवायु वनस्पति की सूचक होती है । जैसी जलवायु होती है, वैसी ही वनस्पति होती है । जलवायु के आधार पर राजस्थान में वनों को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है जो अधोकित है –

(1) शुष्क सागवान वन – ये राजस्थान के दक्षिणी भाग में पाये जाते है एवं कुल वन क्षेत्र के 2,247. 87 वर्ग किमी. (6.86% या लगभग 7%) इनमें सागवान वृक्षों की प्रधानता है ।
- दक्षिणी भाग में सर्वाधिक बांसवाडा में पाये जाते है ।

(2) उष्ण कटिबंधीय शुष्क धोंक वन – ये वन 19027.75 वर्ग किमी. (58.11%) में पाये जाते है ।
- इस वन का मुख्य वृक्ष धोकडा है, जिसकी सर्वाधिक सघनता करौली जिले में है । यहाँ वर्षा का औसत 50–80 सेमी. तक होता है ।

(3) उष्ण कटिबंधीय शुष्क मिश्रित पतझड के वन –
- ये वन 9282.86 वर्ग किमी. (28.38%) औसत वर्षा 80–110 सेमी. के मध्य
- इन वनों को शुष्क मानसूनी वन के नाम से भी जाना जाता है ।
- ये वृक्ष मार्च–अप्रैल के माह में अपने पत्ते गिरा देते है ।

(4) शुष्क कांटेदार वन –
- ये वन 2041.52 वर्ग किमी. (6.26%) क्षेत्र पर पाये जाते है ।
- यहां वर्षा 30 सेमी. से भी कम होती है ।
- यहां की वनस्पति को ''मरूद्भिद'' कहते है ।
- सर्वाधिक संख्या खेजडी के वृक्ष की है ।
- इस क्षेत्र में वन बीड एवं क्षोरण के रूप में मिलते है । राज्य का सबसे बडा क्षोरण देशनोक बीकानेर में है ।

(5) उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन –
- ये वन 126.64 वर्ग किमी. (0.39%) क्षेत्र पर पाये जाते है ।
- ये वन सदा हरे–भरे रहते है । इन्हें सदाबहार वन कहते है ।
- यहां मिलने वाली 830 प्रकार की वानस्पतिक प्रजातियों में से ''क्रिटिलप्टेरा आबू एनसिस'' है । जो संपूर्ण विश्व में केवल इसी क्षेत्र में मिलती है ।

नोटः–
राज्य में सर्वाधिक पाये जाने वाले वन–धोकडा
धोकडा सर्वाधिक–करौली, सवाईमाधोपुर में मिलते है ।
सर्वाधिक आर्थिक महत्व के वन–मानसूनी

राजस्थान के वनों से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

अमृता देवी

रामकोड विश्नोई की पत्नी इमरती देवी ने 28 अगस्त 1730 ई. में जोधपुर नरेश अभय सिंह के समय में खेजडी वृक्ष को बचाने के लिए स्वयं का बलिदान किया था। इसके समय कुल 363 व्यक्तियों ने अपने प्राणो की आहूति दी। इस घटना की स्मृति में विश्व का एकमात्र वृक्ष मेला भाद्रपद शुक्ल दशमी को खेजडली गाँव (जोधपुर) में भरता है ।
विश्व का एकमात्र सबसे बडा वृक्ष मेला भरता है ।

नोटः– राजस्थान में जीवों की रक्षा के लिए प्रथम बलिदान 1604ई. में रामासडी गाँव (जोधपुर) के कर्मा एवं गौरा नामक व्यक्तियों का माना जाता है।

अम्बरतरी

यह उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन क्षेत्र में आबू पर्वत खण्ड पर पायी जाती है । इसका वैज्ञानिक नाम 'डिकिल्प्टेरा आबू एसिस' है । यह विश्व की एकमात्र जगह माउण्ट आबू पर ही मिलती है ।

जूली कॉफी

''CAZRI'' ने हाल ही में बिलायती बबूल 'प्रोसोपिस जूलफ्लोरा' से कॉफी बनाने में सफलता हासिल की है जिसे 'जूली कॉफी' नाम दिया गया है ।

मरूस्थल

खेजडीः– इसे मरूस्थल का कल्प वृक्ष कहते है।
उपनाम – जांटी
– शमी
– सफेद कीकर
– पौधो का दोस्त–वृक्ष
– राजस्थान का राज्य वृक्ष
– सीमलों
– प्रोसोपिस सिनेरेरिया (वैज्ञानिक नाम)

नोट

- सफेदा (यूकेलिप्टस) पौधें का दुश्मन वृक्ष माना जाता है ।

- इसे सरकार द्वारा 31 अक्टूबर 1983 को राज्य वृक्ष घोषित किया गया है ।
- खेजडी के फल या फलियों को सांगरी कहा जाता है।
- खेजडी की पत्तियों को लूंग/लूम/सांगर कहा जाता है।
- पंचकूटाः- राजस्थान में पांच प्रकार के फल एवं बीज यथा- केर, सांगरी, काचर, कूमट के बीच (चापटिया) एवं गुंदा के फल की सब्जी बनाई जाती है जिसे पंचकूटा कहते है। यह विशेषतः शीतलाष्टमी पर बनाई जाती है ।
- मरूस्थल का कल्पवृक्ष भी कहलाता है क्योकि इसका प्रत्येक भाग(पत्तियाँ, फल, छाल, लकडी, जडे आदि) उपयोग होता है साथ ही इस पेड के नीचे अच्छी फसल भी उग सकती है। इन्ही गुणो के कारण लोक जीवन में खेजडी के नीचे लक्ष्मी का निवास माना जाता है ।
- उत्तराखण्ड में 'चिपको आंदोलन' का प्रेरणा स्त्रोत भी यह वृक्ष ही रहा ।
- विजय दशमी के दिन राजा-महाराजा अपने शस्त्रो की पूजा खेजडी के वृक्ष के नीचे ही करते थे ।
- मान्यता है कि जब पाण्डव अज्ञातवास में रह रहे थे, उस समय नकुल ने अपने शस्त्र खेजडी वृक्ष के ऊपर छिपाए थे। यही से इस वृक्ष की पूजा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ है ।
- खेजडी दिवस 12 सितम्बर को मनाया जाता है ।

1. रोहिडाः- वैज्ञानिक नाम-टिकोमेला अण्डूलेटा
   उपनाम- राज्य पुष्प (1983) राजस्थान का सागवान, मारवाड का टीका, मरू की शोभा
   बन्दूक की बट बनती है ।
2. महुआः-वैज्ञानिक
   नाम-मधुका लोंगोफोलिया(सर्वाधिक-डूंगरपुर)
   इसे 'आदिवासियों का कल्पवृक्ष' कहा जाता है ।
   इससे शराब बनती है ।
3. पलास/ढाक/खाखराः-
   वैज्ञानिक नाम-ब्यूटियों मोनोस्पर्मा
   सर्वाधिक-राजसमंद
   इसे "जंगल की ज्वाला" (Flame of the forest) कहा जाता है ।
4. डिकिल्पटेरा आबू ऐंसिस (अम्बरतरी)
   यह एक औषधि वनस्पति है जो विश्व में केवल माउण्ट आबू में पायी जाती है ।
5. खैरः- सर्वाधिक-प्रतापगढ
   वैज्ञानिक नाम - 'अकेरिया-कटेच्यु'
   इसकी छाल से उदयपुर, चित्तौडगढ में कथौडी जाति द्वारा "कत्था" बनाया जाता है ।
6. शहतूतः-सर्वाधिक-प्रतापगढ
   इस वृक्ष पर रेशम के कीट पाले जाते है जिससे रेशम प्राप्त होता है ।
7. तेंदूः- सर्वाधिक-प्रतापगढ
   इसके पत्ते से बीडी बनाई जाती है ।
   इसके पत्तों को-"टिमरू" कहा जाता है ।
   वागड का चीकू
8. जामूनः-सर्वाधिक-माउण्ट आबू
   मधुमेह रोग के लिए उपयोगी ।

9. प्रमुख घास

(i) बांस :- सर्वाधिक-बांसवाडा
यह सबसे लम्बी घास है, इसे "आदिवासियों को हरा सोना" कहा जाता है ।

(ii) लीलण/सेवण घास :-
वैज्ञानिक नाम-लसियुकस सिंडीकुस
(सर्वाधिक-जैसलमेर)
पश्चिम राजस्थान में सबसे लम्बी घास इसके क्षेत्र को "लाठी सीरीज" कहा जाता है । यह गोडावन पक्षी की शरणस्थली कहलाती है ।

(iii) खस :- भरतपुर, टोंक, सवाईमाधोपुर
सुगंधित घास जिसे इत्र बनाने में प्रयुक्त किया जाता है ।

(iv) बुर :- यह बीकानेर क्षेत्र में पाई जाने वली सुगंधित घास है । राजस्थान में पायी जाने वाली सबसे सुगन्धित घास "बुर घास" है ।

(v) मोचिया घास :- तालछापर अभ्यारण्य (चूरू) में पाई जाती है ।

नोटः- कुमट गोंद का उत्पादन सर्वाधिक चौहट्टन क्षेत्र (बाडमेर) से होती है ।

वन गणना

- वन गणना का कार्य-वन सर्वेक्षण संस्थान देहरादून (उत्तराखण्ड)
- वन गणना प्रति दो वर्ष में एक बार होती है ।

वन रिपोर्ट

16वीं 2019 नवीनतम

कुल वन क्षेत्र

प्रतिशत	वनाच्छादित
7.28%	4.86%

नवीनतम वन रिपोर्ट के अनुसार सर्वाधिक वन क्षेत्र में बढोतरी व कमी

बढोतरी	कमी
1. बाड़मेर	1. जालौर
2. डूँगरपुर	2. उदयपुर

- 16वीं IFSR रिपोर्ट के अनुसार सर्वाधिक वन क्षेत्र

क्षेत्र	प्रतिशत
1. उदयपुर	1. उदयपुर (23.51%)
2. अलवर	2. प्रतापगढ (23.33%)
3. प्रतापगढ	3. सिरोही (17.76%)
4. बाराँ	4. बाराँ (15.75%

- 16वीं IFSR रिपोर्ट के अनुसार न्यूनतम वन क्षेत्र

क्षेत्र	प्रतिशत
1. चूरू ($82\ km^2$)	1. जोधपुर (0.46%)
2. हनुमानगढ ($90\ km^2$)	2. चूरू (0.59%)
3. जोधपुर ($105\ km^2$)	3. नागौर (0.83%)
4. श्रीगंगानगर ($113\ km^2$)	4. जैसलमेर (0.85%)

नोट :- राजस्थान में अभिलेखित वन (Recorded forest)= 9.57% (32,737 वर्ग किमी.)
31 मार्च 2019 तक यह क्षेत्र बढकर 32830.26 वर्ग किमी. हो गया है ।

- वन संरक्षण अधिनियम 1980 में बना था ।
- नवीनतम राष्ट्रीय वन नीति 2018
- वन अधिकार अधिनियम 2006
- सर्वप्रथम रिपोर्ट 1987 में
- वन समवर्ती सूची का विषय है ।

नोट - 2017 (15वीं रिपोर्ट) के मुकाबले 2019 (16वीं रिपोर्ट) वनावरण 57.51 किमी.^{2} बढा है ।
16वीं वन रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान के 16 जिलों के वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है । 13 जिलों के वन क्षेत्र में कमी आयी है, जबकि 4 जिलों में न तो कमी न तो वृद्धि 2017 के मुकाबले 2019 में ।

2019 की वन रिपोर्ट

वनों का विस्तार

क्षेत्रफल की दृष्टि से	प्रतिशत की दृष्टि से
1. उदयपुर (2764 वर्ग किमी)	1. उदयपुर (23.58%)
2. अलवर (1197किमी.^{2})	2. प्रतापगढ (23.47%)
3. प्रतापगढ (1044किमी.^{2})	3. सिरोही (17.80%)
4. बांरा (1013 किमी.^{2})	4. करौली (15.78%)

वनों का सबसे कम विस्तार	
क्षेत्रफल की दृष्टि से	जनसंख्या की दृष्टि से
1. चूरू – 73 वर्ग किमी.	1. जोधपुर – 0.46%
2. हनुमानगढ – 90 वर्ग किमी.	2. चूरू – 0.59%
3. जोधपुर – 105 वर्ग किमी.	3. नागौर – 0.81%
4. गंगानगर – 113 वर्ग किमी.	4. जैसलमेर – 0.82%
	5. बीकानेर – 0.82%

वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी कानून/अधिनियम

1. वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम – 1972
2. बाघ संरक्षण अधिनियम – 1973
3. क्रोकोडाइल (मगरमच्छ) संरक्षण अधिनियम – 1975
4. वन संरक्षण अधिनियम – 1980
5. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम – 1986
6. हाथी संरक्षण अधिनियम – 1992
7. जैव-विविधता संरक्षण अधिनियम – 2002
8. डॉल्फिन संरक्षण अधिनियम – 2009

काजरी (CAZRI-Central Arid Zone Research Institute):- स्थापना- 1952, जोधपुर

आफरी(AFRI-Arid Forest Research Institute):- स्थापना- 1988, जोधपुर

राजस्थान के प्रमुख प्रस्तावित पार्क

- प्रति पार्क (Nature Park) – चूरू
- केक्टस गार्डन – कुलधरा (जैसलमेर)
- बटरफ्लाई वैली व बोगनवेलिया पार्क- जयपुर

वन संरक्षण पुरस्कार

1. अमृतादेवी विश्नाई पुरस्कार :- शुरूआत-1994
2. वानिकी पण्डित पुरस्कार :- वृक्षारोपण एवं वन विकास से संबंधित संस्था/व्यक्तिगत
3. वृक्षमित्र पुरस्कार/इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार :- यह पुरस्कार केन्द्र सरकार के द्वारा वृक्षारोपण एवं परती भूमि विकास के लिए दिया जाता है । राशि-2,50,000/रूपये
4. राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार शुरूआत :- 2012

दो स्तर पर

i. संस्थागत – 5 लाख – रजतकमल

ii. व्यक्तिगत – 2 लाख – रजत कमल

5. कैलाश सांखला वन्य जीव पुरस्कार-50 हजार
6. वनपालक पुरस्कार-यह पुरस्कार वन विभाग में कार्यकरने वाले अधिकारी, वनपालकों एवं अन्य कर्मचारियों को दिया जाता है ।
7. राजस्थान ही देश का एकमात्र राज्य है । जिसके वनीय क्षेत्र में वृद्धि दर्ज की गई है ।

राजस्थान में वन्य जीव इनका संरक्षण

वर्तमान में भारत में सर्वप्रथम वन्य जीवों हेतु संहिताबद्ध कानून 1881 में ''वन्य पक्षी सुरक्षा अधिनियम'' बनाया गया ।

1972 में भारत सरकार द्वारा ''वन्यजीव सुरक्षा अधिनियम पारित किया गया जिसे 1973 में राजस्थान में लागू किया गया । इससे वन्यजीवों के शिकार पर पूर्णतया प्रतिबंध लग गया ।

42 वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा ''वन्यजीव विषय को राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची में रख दिया गया ।

समय के साथ-साथ वन्यजीव संरक्षण हेतु केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा कई प्रयास किये गये है जो अद्याकिंत है:-

- जैवमण्डल क्षेत्र
- राष्ट्रीय उद्यान
- अभयारण्य
- मृगवन
- शिकार/आखेट निषेध क्षेत्र
- उद्यान
- जन्तुआलय

राष्ट्रीय उद्यान (National Park)

केन्द्र सरकार के द्वारा विभिन्न जीव जन्तुओं एवं पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिये घोषित स्थल राष्ट्रीय उद्यान कहलाते है । राजस्थान में वर्तमान में 3 राष्ट्रीय उद्यान है:-

1. रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान- सवाईमाधोपुर
2. घना पक्षी विहार- भरतपुर
3. मुकुन्दरा हिल्स - कोटा-बूँदी-चित्तौगढ

अभ्यारण्य (Sanctuary)

राज्य सरकार द्वारा घोषित वह क्षेत्र जहाँ वन्य जीव जन्तु बिना किसी भय के मुक्त विचरण कर सकते है । उसे अभ्यारण्य कहा जाता है । वर्तमान में राजस्थान में इनकी संख्या-26 है ।

राजस्थान में मृगवन

वर्तमान में राजस्थान में 07 मृगवन है निम्नांकित है:-

1. अशोक विहार जयपुर
2. माचिया सफारी मृगवन, का पलाना झील जोधपुर
3. सज्जनगढ मृग वन उदयपुर
4. चित्तौडगढ मृग वन चित्तौडगढ
5. अमृता देवी मृग वन, खेजडली
6. सजंय मृग वन उद्यान शाहपुरा जयपुर
7. पुष्कर मृग वन, पंचकुण्ड अजमेर

राजस्थान के जन्तुआलय

भारत में सर्वप्रथम 1855 में मद्रास में जन्तुआलय स्थापित किया गया ।

राजस्थान में वर्तमान में 05 जन्तुआलय है । भरतपुर व अजमेर संभागो के अलावा सभी संभागों पर जन्तुआलय है 1. उदयपुर, 2. बीकानेर, 3. जोधपुर(माचिया सफारी), 4. कोटा 5. जयपुर (नाहरगढ)

राष्ट्रीय उद्यान

1. रणथम्भौर/राजीव गांधी राष्ट्रीय उद्यान सवाई माधोपुर - अभ्यारण्य दर्रा - 1955

- यह राजस्थान का पहला राष्ट्रीय उद्यान है । उसे 1980 में केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया
- इसके उपनाम:-बाघ भूमि भारतीय बाघों का घर लैण्ड ऑफ टाईगर (क्योंकि यहाँ सर्वाधिक बाघ पाये जाते है और बाघ परियोजना में शामिल होने वाला यह राज्य का प्रथम अभ्यारण्य था । इसे 1973-74 में बाघ परियोजना में शामिल किया गया था ।
- यह 392 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है और राष्ट्र की सबसे छोटी बाघ परियोजना है । (राष्ट्रीय उद्यान - 167 वर्ग गज)
- यहाँ 1996-97 से "Indian Development Project" चलाया जा रहा है जिसे world Bank और वैश्विक पर्यावरण सुविधा की सहायता मिल रही है ।
- यहाँ बरगद के वृक्षो की बहुलता है और प्रमुख आकर्षण मगरमच्छ है ।
- यहाँ पीली घाटी जोगी महल, पदम तालाब, मलिक तालाब, राजबाग तालाब, गिलाई सागर, मानसरोवर तथा लाहपुर तालाब प्रसिद्ध है ।

विशेष:- त्रिनेत्र गणेश, कुक्कर घाटी, जोगी महल

2. केवलादेव या घना पक्षी विहार राष्ट्रीय उद्यान–भरतपुर

- यह भरतपुर जिले में 29 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है ।
- इसे पक्षियों का स्वर्ग भी कहा जाता है ।
- प्रख्यात पक्षी विशेषज्ञ डॉ. सालीम अली के प्रयासो से इसे 1981 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया ।
- सर मार्टिन इवांस ने "भरतपुर बडे पैराडाइज" नामक पुस्तक भी इस पर लिखी ।
- यह एशिया की सबसे बडी पक्षी प्रजनन स्थली है ।
- 1985 में यूनेस्को ने इसे "विश्व प्राकृतिक धरोहर" में शामिल किया एवं 2004 में इसे "विश्व धरोहर जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रम में शामिल किया ।
- यहाँ पक्षियों की लगभग 400 प्रजातियाँ है जिनमें कॉमन क्रेन सफेद साइबेरियन क्रेन आदि प्रसिद्ध है । इस उद्यान को अजान बांध से पानी प्राप्त होता है ।
- यह दिल्ली–आगरा–जयपुर के गोल्डन ट्राइंगल पर स्थित है जिसके कारण यहाँ पर्यटको की तादाद अधिक रहती है ।
- यहाँ केवलादेव नामक शिव भगवान का एक छोटा सा मंदिर है ।
- इसे नमभूमि/वेटलेण्ड स्थल घोषित किया गया है ।

विशेष:–

- डॉ. सालिम अली की कार्यस्थली
- साईबेरियन सारस
- राज्य का एकमात्र पक्षियों का संरक्षण स्थल
- रामसर साईट में शामिल राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान

3. मुकुन्दरा हिल्स/दर्रा राष्ट्रीय उद्यान

- यह कोटा, झालावाड और चित्तौगढ जिलो के लगभग 300 वर्गकिमी में अवस्थित है । इसे 9 जनवरी 2012 में राष्ट्रीय घोषित किया गया है ।
- राजस्थान में सर्वाधिक पशु इसी उद्यान में है । यह गागरोनी तोते (हीरामन तोते) घडियाल, सारस आदि हेतु प्रसिद्ध है ।
  - यहाँ अबाली मीणी का महल, गुप्तकालीन भीम चंवरी और हूणो द्वारा बनाया गया बाडोली का शिव मंदिर है ।
  - यहाँ चम्बल, कालीसिंध, आहू एवं अमझर नदियाँ प्रवाहित होती है ।
  - यह राज्य का तीसरा टाईगर रिजर्व है ।
  - 2003 – राजीव गाँधी अभयारण्य
  - 2006 – मुकन्दरा हिल्स अभयारण्य
  - बाघ परियोजना – 2013 में।
  - एक मात्र अभयारण्य जो अरावली श्रृंखला में नहीं आता ।

अन्य वन्यजीव अभ्यारण्य

1. राष्ट्रीय मरू उद्यान:– स्थापना– 1980, जैसलमेर, बाडमेर सबसे बडा अभ्यारण्य (3162 वर्ग किमी.)
2. तालछापर वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1971, चुरू, कृष्ण मृग, मोथिया घास, लाना झाडी व कुरंजा पक्षी आते है ।
3. जमवारामगढ वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1982, जयपुर, उपनाम – जयपुर का पुराना शिकारगाह
4. नाहरगढ वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1980, जयपुर, बॉयोलोजिकल पार्क स्थापित किया गया ।
5. सरिस्का वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1955, अलवर, बाघों का घर, क्षेत्रफल – 452 किमी.
6. बंध बारेठा वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1985, भरतपुर, जरख पाए जाते है ।
7. रामसागर वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1955, धौलपुर
8. वन विहार वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1955, धौलपुर
9. केसरबाग वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1955, धौलपुर
10. कैलादेवी वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1983, करौली एवं सवाई माधोपुर, इसे डांगलैण्ड भी कहते है ।
11. राष्ट्रीय चम्बल घडियाल अभ्यारण्य:– स्थापना– 1978, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, बूंदी एवं कोटा । तीन राज्यों में विस्तृत उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान

अभ्यारण्य

क्षेत्रफल – 5400 किमी.^{2}

उपनाम – जलीय पक्षियों की प्रजनन स्थली, घडीयालों का संसार एकमात्र नदी अभ्यारण्य

इसमें गागेरुप, डॉल्फिन (शिशुमार मछली) पायी जाती है ।

12. सवाईमान सिंह वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1984, सवाईमाधोपुर
13. रामगढ विषधारी वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1982, बूंदी, अजगर शरण स्थली

    नवीनतम टाइगर रिर्जव
14. जवाहर सागर वन्य जीव अभ्यारण्य:– स्थापना– 1975, बूंदी, कोटा, चित्तौडगढ

15. मुकुन्दरा हिल्स(दर्जा वन्य जीव) अभ्यारण्यः- स्थापना- 1955, कोटा, बूंदी, झालावाड
16. शेरगढ वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1981, बांरा
17. कुम्भलगढ वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1971, उदयपुर, पाली एवं राजसमंद
    क्षेत्रफल - 609 किमी.^{2}
    उपनाम - लोमडी व भेडियों की प्रजनन स्थली
    एण्टीलोप - चौसिंगा हिरण पाये जाते है ।
    नवीनतम टाइगर रिजर्व
18. सीतामाता वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1979, चित्तौडगढ, प्रतापगढ एवं उदयपुर
    क्षेत्रफल - 422 किमी.^{2}
    उपनाम - चितल की मातृभूमि, उडन गिलहरी का स्वर्ग यहां सुन्दर छिपकली यूब्लेफरिस पायी जाती है ।
19. भैसरोडगढ वन्य जीव अभ्यारण्य :- स्थापना- 1983, चित्तौडगढ, घडियालों की पंसद
20. बस्सी वन्य जीव अभयरण्यः- स्थापना- 1988., चित्तौडगढ, चितल की चहल-पहल
21. फुलवारी की नालः- स्थापना- 1983, कोटडा (उदयपुर) 492 वर्ग किमी.
22. जयसमन्द वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1955, उदयपुर
23. सज्जनगढ वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1987, उदयपुर
24. टॉडगढ रावली वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1983, अजमेर, पाली एवं राजसमंद
    क्षेत्रफल - 495 किमी.^{2}
    तीन संभागों में फैला हुआ एकमात्र अभ्यारण्य है ।
25. माउण्ट आबू वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1960, सिरोही
    सबसे ऊँचाई पर स्थित
    डंगली मुर्गे पाए जाते है ।
26. सरिस्का (अ) अभ्यारण्यः- स्थापना- अप्रैल 2013, अलवर
    राजस्थान का सबसे छोटा अभ्यारण्य (3 वर्ग किमी)

प्रत्येक अभ्यारण्य में ये लिख सकते है कि यह स्थानीय/देशी/विदेशी पर्यटन के लिये प्रसिद्ध है ।

बाघ परियोजना			
रणथम्भौर	सरिस्का	मुकुंदर्रा हिल्स	कुम्भलगढ
स्था. 1974	स्था. 1978	स्था. 2013	हाल ही में राज्य सरकार ने इसे टाईगर रिजर्व क्षेत्र बनाने की घोषणा की है ।

सवाई माधोपुर	अलवर	कोटा, बूँदी, झालावाड, चित्तौड	

रामसर साइट/आर्द्र भूमि/नम भूमि :-

- वे आर्द्र भूमि जहां विशेष जीव एवं पक्षियों को संरक्षण मिलता है ।
- राजस्थान में वर्तमान में 2 रामसर साईट है ।-
  (1) केवलादेव (2) सांभर
- दो रामसर साईट प्रस्तावित है-
  (1) मानसागर- जयपुर (2) चम्बल

गोडावण

- 1980 में गोडावण पर प्रथम अन्तराष्टीय सम्मेलन का आयोजन जयपुर में किया गया जिसकी सिफारिशों के आधार पर 1981 में राज्य सरकार ने इसे "राज्य पक्षी" घोषित किया
- उपनामः- गुजंन सोहन चिडिया, गुधना, दुकना, गुधनमेर, घोघाड, और हाडौती क्षेत्र में इसे मालमोरडी कहते है।
- वैज्ञानिक नाम :- Ardeotis Nigriceps
- अंग्रेजी नाम :- Great Indian Bustard
- राजस्थान में गोडावण के लिये 04 स्थान प्रसिद्ध है ।
- राष्ट्रीय मरू उद्यान-जैसलमेर
- सोरसन उद्यान- बारा
- सांकलिया उद्यान-अजमेर
- रामदेवरा उद्यान- जैसलमेर
- जोधपुर में गोडावन का कृत्रिम प्रजनन केन्द्र खोला जा रहा है ।

चिंकारा :- (गडेला-गडेला)

- इसे 1981 में राज्य पशु घोषित किया गया ।
- इसके उपनाम-छोटा हिरण(एन्टीलोप)
- वास्य क्षेत्रः- तालछापर(चूरू), सीतामाता (प्रतापगढ)
- राजस्थान में एण्टीलोप प्रजाति का चिंकारा पाया जाता है ।
  नोट :- चिंकारा एक तत् वाद्य भी है ।

रोहिडा (टेकोमेला अण्टूलेटा)

- इसे 1983 में राज्य वृक्ष घोषित किया गया
- उपनामः- रेगिस्तान का सागवान, मरू सोना
- रोहिडा के फूल मारवाड के टीक कहलाते है ।

- इसकी लकडी से फर्नीचर बनते है । इसकी लकडी भारी एवं मजबूत होती है तथा दीमक नही लगती है ।
- यह मुख्यतया: पश्चिमी राजस्थान में पाये जाते है ।

बूर

यह मुख्यतया: बीकानेर जिले में पायी जाती है और इससे सुगन्धित तेल की प्राप्ति होती है।

डाब

यह लगभग सम्पूर्ण राजस्थान में पायी जाती है । विवाह धार्मिक अवसरों एवं ग्रहण पर इसका प्रयोग होता है ।

गागरोनी तोता

- इसका वैज्ञानिक नाम 'एलेक्जेन्ड्रिया पेराकीट' है
- इसे हिरामन तोता भी कहा जाता है ।
- यह मुकुन्दर्रा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान में सर्वाधिक पाया जाता है
- यह मानव आवाज की हूबहू नकल करने वाला पक्षी माना जाता है ।

नोट :- कैलाश सांखला

- प्रसिद्ध वन्य जीव प्रेमी जिनका जन्म जोधपुर में हुआ । बाघो के संरक्षण के प्रयास के कारण इन्हे टाइगर मैन ऑफ इंडिया के नाम जाना जाता है ।
- 1972 में इन्हे पद्मश्री व 2013 में राजस्थान रत्न से सम्मानित किया गया ।
- इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ (Books) द टाइगर और द रिटर्न ऑफ टाइगर है ।

कन्जेंवेशन रिजर्व

कन्जेंवेशन रिजर्व	स्थान
1. जोहडबीड कन्जेंवेशन रिजर्व	बीकानेर
2. जवाई बॉध कन्जेंवेशन रिजर्व	पाली
3. बीड कन्जेंवेशन रिजर्व	झुंझुनूँ
4. बॉरियाल कन्जेंवेशन रिजर्व	खेतडी-झुंझुनूँ
5. बिसलपुर कन्जेंवेशन रिजर्व	टोंक
6. सुंधामाता कन्जेंवेशन रिजर्व	जालौर-सिरोही
7. शाकम्भरी कन्जेंवेशन रिजर्व	सीकर-झुंझुनू
8. गोगेलाव कन्जेंवेशन रिजर्व	नागौर
9. गुढा विश्नोई कन्जेंवेशन रिजर्व	जोधपुर
10 रोटू कन्जेंवेशन रिजर्व	नागौर
11. उम्मेदगंज पक्षी कन्जेंवेशन रिजर्व	कोटा

राजस्थान के जिलों हेतु निर्धारित वन्यजीव शुभंकर

क्र सं.	जिला	शुभंकर
1.	अलवर	सांभर
2.	अजमेर	खरमोर पक्षी
3.	बाडमेर	मरूलोमडी / लाँकी
4.	बारां	मगरमच्छ
5.	भीलवाडा	मोर
6.	बांसवाडा	जल पीपी
7.	भरतपुर	सारस (क्रेन)
8.	बीकानेर	भट्टीतर (रेत का तीतर)
9.	बूंदी	सुखांव
10.	चुरू	कृष्ण मृग
11.	दौसा	खरगोश
12.	धौलपुर	पचीरा (इण्डियन स्क्रीमर)
13.	चित्तौडगढ	चौसिंगा
14.	डूंगरपुर	जांघिल, घोंक
15.	जालौर	भालू
16.	जैसलमेर	गोडावन
17.	जोधपुर	कुरंजा
18.	जयपुर	चीतल
19.	झुन्झुनू	काला तीतर
20.	झालावाड	गागरोनी तोता/हिरामण
21.	हनुमानगढ	छोटा किलकिला
22.	करौली	घडियाल
23.	कोटा	उद बिलाव
24.	नागौर	राजहंस
25.	पाली	तैंदुआ
26.	प्रतापगढ	उडन गिलहरी
27.	राजसमंद	भेडिया
28.	सवाईमाधोपुर	बाघ
29.	गंगानगर	चिंकारा
30.	सीकर	शाहीन
31.	सिरोही	जंगली मुर्गी
32.	टोंक	हंस
33.	उदयपुर	कब्र बिज्जू

सिन्धियों के त्यौहार

चेटीचण्ड/झूलेलाल जयन्ती (झूलेलाल को वरूण का अवतार मना जाता है)	चैत्र शुक्ल
थदडी सातमः	भाद्रपद कृष्ण सप्तमी

ईसाईयों के त्यौहार

गुड फ्राइडे : इस दिन ईसा मसीह को फांसी पर चढाया गया था ।

गुड फ्राइडे :- ईस्टर से ठीक पहला फ्राइडे होता है ।

ईस्टर : इस दिन ईसा मसीह पुर्नजीवित हुये थे । यह रविवार का दिन था । 2 मार्च से 22 अप्रैल के बीच जो पूर्णिमा आती है उसके ठीक बाद वाला रविवार, ईस्टर होता है ।

असंन्शन डे : ईस्टर के 40 दिन बाद आता है । इस दिन ईसा मसीह वापस स्वर्गलोक चले गये थें ।

राजस्थान के लोक देवता

पाबू हडबू रामदे, मांगलिया मेहा ।
पाँचू पीर पधारज्यों, गोगाजी जेहा ॥
पाबू हडबू रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी : ये 5 पीर हैं । जिन्हे हिन्दु व मुसलमानों दोनों मानते हैं ।

1. पाबूजीः (पाबूजी राठौड)

जन्म स्थान : 1239 ई. कोलूमण्ड (जोधपुर)
पिता : धाँधल
माता : कमला दे
पत्नी : फूलमदे/सुप्यार दे (अमरकोट की राजकुमारी)
पाबूजी की घोडी : ''केसर कालमी'
मंदिर : कोलूमंड (जोधपुर)
प्रमुख वाद्ययंत्र : रावणहत्था
उपनाम : गौ रक्षा देवता, ऊँटो के देवता, प्लेग रक्षक देवता, लक्ष्मण के अवतार, वचन पुरुष देवता, अछुतोद्धारक देवता

- पाबूजी को ''लक्ष्मण जी का अवतार'' माना जाता है ।
- पाबूजी के मेले मे 'थाली' नृत्य किया जाता है ।
- पाबूजी प्लेग रक्षक एवं ऊंटो के देवता है ।
- राजस्थान में सर्वप्रथम ऊंट लाने का श्रेय पाबूजी को दिया जाता है ।
- देवल नामक चारण महिला की गायों की रक्षा के लिए चार फेरे लेकर बीच में उठकर आ गये थे अतः पश्चिमी राजस्थान में आज भी शादी मे चार फेरे लिये जाते है । ''देचू गाँव (जोधपुर)'' में ''जींदराव खींची'' के खिलाफ लडते हुये मारे गये थे ।
- चाँदा व डामा नामक 2 भील भाई इनके सहयोगी
- थें ।
- राईका/रैबारी/देवासी (ऊँट पालने वाली जाति) पाबूजी को अपना प्रमुख देवता मानते हैं ।
- पाबूजी को ''प्लेग रक्षक देवता'' भी कहा जाता है ।
- कोलूमण्ड (जोधपुर) में ''चैत्र अमवस्या'' (होली के 15 दिन बाद) को पाबूजी का मेला
- पाबूजी की फड ''सबसे लोकप्रिय फड है ।'' भील जाति के भोपे इसे रावणहत्था वाद्य यंत्र के साथ गाते है
- पाबूजी बाईं ओर झुकी हुई पाग के लिए प्रसिद्ध है ।
- पाबूजी की पूजा हाथ भाला लिए हुए अश्वारोही के रूप में होती है ।
- थोरी जाति के लोग सारंगी द्वारा पाबूजी का यश गाते है । जिसे ''पाबू धणी री वाचना'' कहते है ।

- पाबूजी ने 7 थोरी (जाति) भाइयों को शरण दी थी ।
- पाबूजी के पवाडे (भजन) रेबारी जाति के लोग (किसी वीर पुरूष की याद में गाये जाने वाले) माट (बडे मटके की तरह का) वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं ।
- आशिया मोडजी की पुस्तक – "पाबू प्रकाश"

2. रामदेवजीः (रामदेवजी तँवर)

जन्म स्थान – उण्डू काश्मीर (बाडमेर)
पिता – अजमाल जी
माता – मैणादे
पत्नी – नेतल दे (अमरकोट की राजकुमारी)
गुरू – बालीनाथ जी
मन्दिर – रूणीचा (रामदेवरा) (जैसलमेर), छोटा रामदेवरा (गुजरात), मसूरिया (जोधपुर), बराठिया (अजमेर), सूरताखेडा (चित्तौड), राजस्थान को छोटा रामदेवरा (अजमेर)
उपनाम – पीरों के पीर, रामसापीर, रुणेचा रा धणी, साम्प्रदायिकता के देवता, कृष्ण के अवतार

- रामदेवजी का जन्म विक्रमी संवत 1409 से 1462 के मध्य माना जाता है । उनका जन्म भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को हुआ था जिसे "बाबा री बीज" कहते है । इस जम्मा भी कहते है ।
- रामदेवजी को राव मल्लीनाथ ने पोकरण की जागीर दी थी । जो रामदेव जी ने अपनी भतीजी के विवाह मे जगमाल मालावत के पुत्र हमीर को दहेज मे दे दी ।
- विक्रमी संवत 1515 को इन्होने रामसरोवर (रूणीचा) में जीवित समाधि ले ली थी ।
- रामदेवजी के चमत्कारों को "परचा" कहा जाता है । इन्होने मक्का के पांच पीरों को परचा दिया था । अतः मुस्लिम समाज में "रामसापीर" कहलाये ।
- हरजी भाटी इनके प्रमुख सहयोगी थे ।
- डालीबाई इनकी अनन्य मेघवाल भक्त थी । जिसने रामदेवजी से एक दिन पूर्व रूणीचा में समाधि दी ।
- रामदेव जी एक मात्र लोक देवता हैं । जो कवि थे । रामदेव जी पुस्तक – "चौबीस बाणियाँ" हैं ।
- रामदेवजी ने "कामडिया पंथ" की शुरूआत की थी ।
- कामडिया पंथ की महिलाओं द्वारा "तेरहताली नृत्य" किया जाता है ।
- "भाद्रपद शुक्ल एकादशी" को रामदेव जी ने जीवित समाधि ली थी ।
- भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से लेकर एकादशी तक विशाल मेला भरता है ।
- रामदेवजी के मन्दिर में "पगल्या" पूजे जाते है ।
- नेजा – रामदेवजी का झण्डा (पचरंगा) (नेजा = झण्डा)
- लीलों – रामदेवजी के घोडे का नाम (लीला = घोडा)
- जम्मा – रामदेवजी के जागरण
- रामदेव जी कृष्ण एवं विष्णु के अवतार माने जाते है । ये सांप्रदायिक सौहार्द एवं सदभाव के देवता है ।
- रामदेव जी छुआछूत एवं भेदभाव मिटाने वाले देवता माने जाते है ।
- रामदेव जी ने भैरव राक्षस का अंत किया था ।
- रामदेव जी के पुजारी तंवर जाति के राजपूत होते है ।
- "रिखियां" – रामदेवजी के मेघवाल जाति के भक्त को कहा जाता है । ये रिखियां जो भजन गाते है उन्हें "ब्यावले" कहा जाता है ।
- सोने या चांदी के पात्र पर रामदेव जी का चित्र खुदवाकर जो लोग गले मे पहनते है उसे "फूल" कहते है ।

3. गोगाजी : (गोगाजी चौहान)

जन्मस्थान : ददरेवा (चुरू) 1003 विक्रमी संवत ।
पिता का नाम : जेवर
माता का नाम : बाछल
पत्नी : केलमदे (जोधपुर)
कश्मिल (UP)
उपनाम : गोगापीर, जिन्दापीर, साँपो का देवता, गौरक्षक
गुरु : गोरखनाथ

- यह मुहम्मद गजनवी व गौरखनाथ के समकालीन थे ।
- उनका अपने मौसेरे भाई अर्जन – सर्जन के साथ सम्पति का विवाद चल रहा था ।
- अर्जन – सर्जन मुस्लिम सेना लेकर आये और गोगाजी की गायों को घेर लिया अतः – अपने मौसेरे भाईयों अर्जन-सर्जन के खिलाफ गायों की रक्षा करते हुये मारे गये थे ।
- गोगाजी ने महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था तथा गजनवी ने इन्हें "जाहिर पीर" (साक्षात देवता) कहा था ।
- ददरेवा के मन्दिर को "शीर्ष मेडी" (सिर कट कर गिरा था) (चुरू) तथा
- गोगामेडी (हनुमानगढ) के मन्दिर को "धुर मेडी" (धड कट कर गिरा था)
- गोगामेडी (हनुमानगढ) में 11 महीने पूजा चामल जाति के मुस्लिम तथा 1 माह हिन्दू व मुसलमान दोनों मिलकर पूजा करते हैं ।
- "सर्प रक्षक देवता" के रूप में पूजे जाते है ।

- गोगाजी के मन्दिर खेजडी के नीचे बनाये जाते हैं । (गोगाजी के मन्दिर को मेडी कहते हैं ।)
- भाद्रपद कृष्ण नवमी को गोगाजी का विशाल मेला लगता है ।
- गोगाजी की सवारी नीली घोडी है । जिसे "गोगा बापा" कहा जाता है ।
- हिन्दू "नागराज" एवं मुस्लिम "गोगा पीर" की पूजा रूप मे पूजा करते है । गोगाजी की पूजा भाला लिए हुए योद्धा के रूप में की जाती है ।
- गोगा जी के मंदिर खेजडी वृक्ष के नीचे होते है ।
- गोगामेडी का मन्दिर "मकबरा शैली" में बना हुआ है ।
- मन्दिर में "बिस्मिल्लाह लिखा" हुआ है ।
- खिलेरियों की ढाणी (सांचौर, जालौर) में गोगाजी की ओल्डी (छोटा मन्दिर) बनी हुई है ।

4. हडबूजी सांखला

पिता – मेहा जी सांखला
जन्म – भूडेल, नागौर
गुरू – बालकनाथ
मेला – भाद्रपद शुक्ल पक्ष
उपनाम – बाल ब्रह्मचारी, वीर योद्धा, गौ रक्षक देवता
शकुन शास्त्र के ज्ञाता

- पिता की मृत्यु के बाद भूडेल छोडकर हरभमजाल में आकर रहने लगे ।
- रामदेव जी की प्रेरणा से संत बने ।
- ये रामदेवजी के मौसेरे भाई थे ।
- इन्होंने जोधा को मण्डोर जीतने का आशीर्वाद दिया था तथा उसे एक कटार भेंट की थी । मण्डोर जीतने के बाद जोधा ने इन्हें बेंगटी (जोधपुर) गाँव दिया जहाँ पर ये बूढी तथा विकलांग गायों की सेवा करते थे । बेंगटी (जोधपुर) मे इनका मुख्य मंदिर है । बावनी जागीर भेंट की ।
- जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने यहाँ मन्दिर का निर्माण करवाया । मन्दिर में "हडबूजी की बैलगाडी की पूजा" की जाती है ।
- हडबूजी का वाहन – "सियार"
- हडबूजी "शकुनशास्त्र (भविष्य वक्ता)" के ज्ञाता थे ।

5. मेहाजी मांगलिया

- राव चूंडा के समकालीन थे ।
- पालन-पोषण – नैनीहाल मे मांगलिया गोत्र में हुआ था । अतः मांगलिया मेहाजी के नाम से प्रसिद्ध हुए ।
- मुख्य मंदिर : बापीणी (जोधपुर)
- जैसलमेर के "राणगदेव भाटी" के खिलाफ युद्ध में मारे गये थे ।
- इनके घोडे का नाम : किरड काबरा
- इनके भोपों के वंश वृद्धि नहीं होती है । ये सन्तान को गोद लेकर वंश आगे बढते है ।
- इनका मेला भाद्रपद कृष्ण जन्माष्टमी को लगता है ।

6. तेजाजी

- जन्म – माघ शुक्ल चतुर्दशी 1073 ई. में
- खरनाल (नागौर) में एक जाट परिवार में जन्म हुआ था ।
- पिता – ताहड जी
- माता – रामकुंवरी
- पत्नी – पेमल दे
- घोडी – लीलण/सिणगारी
- घोडला – पुजारी (यह साँप काटे व्यक्ति का जहर मुँह से चूसकर निकालता है।)
- उपनाम – नागों के देवता, गौरक्षक देवता, धोल्या वीर, काला-बाला के देवता, कृषि उपकारक देवता

तेजाजी के आराध्य स्थल

पनेर (अजमेर) – तेजाजी का पुजारी माली जाति का होता है ।

ब्यावर (अजमेर) – यहाँ तेजा चौक स्थित है ।

भावता (अजमेर) – यहाँ गोमूत्र से साँप काटे व्यक्ति का इलाज होता है ।

- तेजाजी अपनी पत्नी को लाने अपने ससुराल पनेर (अजमेर) जा रहे थें ।
- "सुरसुरा (अजमेर)" नामक गाँव में लाछा नामक गुर्जर महिला की गायों को बचाते हुऐ घायल हुये तथा एक साँप के काटने से इनकी मृत्यु हो गई थी । इनके साथ उनकी पत्नि पेमल भी सती हो गई थी ।
- खरनाल मे तेजाजी का मंदिर है जिसे थान कहा जाता है ।
- जोधपुर महाराजा अभयसिंह के समय परबतसर (नागौर) में तेजाजी का मन्दिर बनवाया गया ।
- भाद्रपद शुक्ल दशमी को परबतसर में विशाल पशु मेला लगता है ।
- तेजाजी "सर्परक्षक देवता" एवं कुत्ते के काटे हए का ईलाज किया जाता है ।
- इन्हें "काला-बाला का देवता" भी कहा जाता है ।
- गोगा जी को धोलिया वीर कहा जाता है ।

- गोगा जी को तलवार धारण किये हुये घोडे पर सवार योद्धा के रूप मे दर्शाया गया है । जिनकी जीभ को सर्प डस रहा है ।
- गोगा जी को डसने वाले नाग का नाम "बासक" था । गोगा जी के भोपा को घोडला कहा जाता है ।
- ऐसी मान्यता है कि सर्प दंशित व्यक्ति के दांये पैर मे तेजाजी की तांत (डोरी) बांध दी जाये तो विष नही चढता ।
- "हल जोतते समय" किसान "तेजाजी का गीत" गाता है ।
- 2010 में तेजाजी पर डाक टिकट जारी किया गया ।
- तेजाजी की बहिन डुंगरी माता का मन्दिर खडनाल (नागौर) में बना हुआ है ।

7. देवनारायण जी

- जन्म स्थान : आसीन्द (भीलवाडा)
- 1243 ई. में इनका जन्म बगडावत गुर्जर परिवार में हुआ था ।
- पिता : "सवाई भोज"
- माता का नाम – सेढू बाई
- पत्नि – पीपल दे (धार नरेश जय सिंह की पुत्री)
- बचपन का नाम – उदय सिंह
- भिनाय के ठाकुर को मारकर अपने पिता व भाइयों की हत्या का बदला लिया ।
- इन्हें (देवनारायण जी) "विष्णु भगवान का अवतार" माना जाता है ।
- इन्हें "औषधि का देवता" कहा जाता है ।
- आसीन्द (भीलवाडा) व देवमाली (अजमेर) इनके मुख्य मंदिर है ।
- इनके मन्दिर में नीम के पत्ते चढाये जातें है ।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती बल्कि ईंटो की पूजा की जाती है ।
- मेला : "भाद्रपद शुक्ल सप्तमी"
- देवनारायण की फड सबसे बडी व सबसे छोटी फड है ।
- वर्तमान मे जर्मनी के म्यूजियम मे रखी हुई है ।
- यह "जन्तर वाद्य यंत्र" के साथ गुर्जर जाति के भोपें गाते है ।
- 1992 में इस फड पर डाक टिकट जारी हो चुका है । यह राजस्थान के पहले लोक देवता है जिन पर 2011 में 5 रूपये का डाक टिकट जारी हुआ है ।
- उनके घोडे का नाम "लीलागर" था ।

मुख्य मन्दिर :
1. आसीन्द (भीलवाडा)
2. जोधपुरिया (टोंक)
3. देवमाली (अजमेर)

8. देवबाबा

- मुख्य मन्दिर : नगला जहाज (भरतपुर)
- देवबाबा पशु चिकित्सक थें ।
- इन्हें खुश करने के लिए 7 ग्वालों को भोजन करवाना पडता है ।
- देवबाबा की सवारी भैंसा है ।

मेले

- भाद्रपद शुक्ल पंचमी (ऋषि पंचमी के दिन)
- चैत्र शुक्ल पंचमी

9. मल्लीनाथ जी

जन्म – 1358
पिता – राव तीडा (मलखा)
माता – जीणादे
पत्नि – रूपलदे
गुरू – उगम सी

- पालन-पोषण – महेवा के शासक कान्हड देव (चाचा) ने किया ।
- ये "मारवाड के राठौड राजा" थे । मेवा नगर को अपनी राजधानी बनाया ।
- इन्होने राव चूंडा को मारवाड व नागौर जीतने मे सहायता की ।
- मुख्य मन्दिर : तिलवाडा (बाडमेर)
- यहाँ पर चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ली एकादशी तक विशाल मेला लगता है । जहां 15 दिन का "मल्लीनाथ पशु मेला" होता है ।
- इनके नाम पर बाडमेर क्षेत्र का नाम मालानी पडा ।
- मलाणी नस्ल के घोडों का क्रय-विक्रय
- मल्लीनाथ जी "भविष्य दृष्टा" एवं चमत्कारी पुरूष थे ।
- इनकी रानी रूपा दे का मन्दिर मायाजाल (बाडमेर) में है ।
- उगमडी भाटी से योग साधना की दीक्षा ग्रहण की ।

10. तल्लीनाथ जी

मूल नाम – गांगदेव राठौड, जन्म – 1544 ई.
पिता का नाम – वीरमदेव

- ये "शेरगढ (जोधपुर)" के राजा थे ।
- इनके गुरू : जालन्धर नाथ
- मुख्य मंदिर : पांचोटा (जालौर)

- इन्हें "ओरण का देवता" कहा जाता है ।
- ओरण : मन्दिर के आस-पास छोडी गई जमीन जहाँ से पेड- पौधे नहीं काट सकते ।
- जहरीले कीडे के काटने पर इनका डोरा अथवा धागा बांधा जाता है ।
- प्रकृति प्रेमी लोक देवता ।

11. बिग्गा जी

- पिता : राव मोहन
- माता : सुल्तानी
- मुख्य मंदिर : रीडी (बीकानेर)
- गायों की रक्षा करते हुए शहीद हो गये थे ।
- ये जाखड समाज (जाट) के कुल देवता हैं ।

12. खेतला जी

- मुख्य मंदिर : सोनाणा (पाली)
- मेला : "चैत्र शुक्ल एकम" को मेला लगता हैं ।
- यहाँ पर "हकलाने वाले बच्चों का इलाज" होता है ।

13. हरिराम जी

- मुख्य मंदिर : झोरडा (नागौर)
- पिता - राम नारायण
- माता - चंदणी देवी
- गुरू - भूंरा
- "सर्प रक्षक देवता"
- मेलाः "भाद्रपद शुक्ल पंचमी"
- मंदिर में "सांप की बांबी" (साँप का बिल) की पूजा की जाती हैं ।

14. झरडा जी

- पाबूजी के भतीजे थे ।
- पिता - बूढोंजी
- माता - केसर कंवर
- जींदराव खींची (जायल का राजा) को मारकर अपने पिता व चाचा की हत्या का बदला लिया
- मन्दिर :
  1. कोलुमण्ड (जोधपुर)
  2. सिंभूदडा (बीकानेर)
- इन्हें रूपनाथ भी कहा जाता है ।
- हिमाचल प्रदेश में इन्हें "बालक नाथ" कहा जाता है ।

15. जुन्झार जी

- जन्म स्थान : इमलोहा (सीकर)
- स्थान - खेजडी के पेड के नीचे
- "स्यालोदडा (सीकर)" गाँव में गायों की रक्षा करते हुए मारे गये थें । यहाँ पर 'दुल्हा-दुल्हन' तथा "इनके 3 भाई" की मूर्तियाँ बनी हुई हैं ।
- रामनवमी के दिन यहाँ पर मेला लगता हैं ।

16. वीरफता जी

- स्थान - बबूल वृक्ष के नीचे
- मुख्य मंदिर : साथू (जालौर)
- "भाद्रपद शुक्ल नवमी" को इनका मेला लगता है ।
- जालौर के लोकदेवता है ।

17. आलम जी

- मुख्य मंदिर : धोरीमन्ना (बाडमेर)
- ढंगी नामक धोरे पर मंदिर है जिसे आलम जी का धोरा कहा जाता है ।
- भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को मेला लगता है ।
- आलम जी को "घोडा रक्षक देवता" कहा जाता हैं ।
- आलम जी जैतमालोत राठौड थे ।
- राठौडों के कुलदेवता

18. केसरिया कुंवरजी

- गोगाजी के बेटे थे ।
- इन्हें भी 'सर्परक्षक देवता' के रूप में पूजा जाता हैं ।

19. मामादेव

- प्रमुख मंदिर - स्यालोदडा (सीकर)
- ये "बरसात के देवता" हैं ।
- इनका मन्दिर नहीं होता है बल्कि इनके "तोरण की पूजा" की जाती है ।
- इन्हें खुश करने के लिए "भैसें की बली" देनी पडती हैं ।

20. डूंगजी - जवाहर जी

- "बाठोठ - पाटोदा (सीकर)" गाँव के सामन्त थे तथा अमीरों को लूट कर उनका धन गरीबों में बाँट दिया करते थे ।
- इन्हें अंग्रेजों की नसीराबाद की छावनी लूट ली थी ।

राजस्थान की जनजातियाँ

राजस्थान का जनजातियों की जनसंख्या की दृष्टि से भारत में 6 वां स्थान है ।
प्रथम – एम.पी
द्वितीय – महाराष्ट्र
तृतीय – उडीसा
चतुर्थ – बिहार
पंचम – गुजरात

राजस्थान में :-

- जनजातियों की सर्वाधिक जनसंख्या – उदयपुर
- जनजातियों का सर्वाधिक प्रतिशत – बाँसवाडा
- जनजातियों की न्यूनतम प्रतिशत – नागौर
- जनजातियों की न्यूनतम जनसंख्या–बीकानेर

1. कंजर

- कंजर शब्द ''काननचर'' से उत्पन्न हुआ है ।
- कंजर जनजाति अधिकतर ''हाडौती क्षेत्र'' में निवास करती है ।
- 1974 में चाँचेडा रशीद अहमद पहाडी द्वारा प्रसिद्धि दिलायी ।
- इनके मुखिया का पटेल कहा जाता है ।
- इनके घरों के पीछे खिडकियां अनिवार्य होती है ।
- मोर का मांस इन्हे प्रिय है ।
- आराध्य देवता – हनुमान जी
- आराध्य देवी – चौथ माता
- शव का दफनाते है ।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुंह में शराब डाली जाती है ।
- महिलाएं चकरी नृत्य करती है ।
- नृत्य के समय जो पायजामा पहनती है उसे ''खुशनी'' कहा जाता है ।
- कंजर जनजाति का मुख्य व्यवसाय चोरी करना
- चोरी करने से पहले देवताओं से आर्शीवाद लेते है । इसे ''पाती माँगना'' कहते है ।
- हाकम राजा का प्याला पीकर कंजर कवि झूठ नही बोलते ।

मुख्य देवता

1. 'जोगणिया माता'– ''कंजरो की कुलदेवी''
2. चौथ माता
3. रक्तदंडी माता
4. हनुमान जी

2. कथौडी

- मूल रूप से महाराष्ट्र की जनजाति है ।
- राजस्थान के उदयपुर जिले में अधिक निवास करती है ।
- ये लोग खैर के पेड से कत्था प्राप्त करते थे इसलिए इन्हें कथौडी कहा जाता है ।
- ये शव को दफनाते है ।
- कथौडी दूध नहीं पीते ये शराब अधिक पीते है ।
- महिलाये भी साथ में शराब पीती है ।
- ये लोग ''बंदर का माँस'' खाते है ।
- महिलाएँ गहने नहीं पहनती है लेकिन ''गोंदना'' बनवाती है ।
- कथौडी महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली साडी ''फडका'' कहलाती है ।
- इनके घरों को खोलरा कहा जाता है ।
- पुरूषों द्वारा मावलिया एवं लावणी नृत्य किया जाता है ।
- दल का नेता 'नायक' कहलाता है ।
- महिलाऐं होली पर होली नृत्य करती है ।
- कथौडी एक संकटग्रस्त (विलुप्तप्राय) जनजाति है जिनके केवल 35–40 परिवार ही बचे है ।
- राजस्थान सरकार इन्हें मनरेगा में 200 दिन का अतिरिक्त रोजगार देती है ।

इनका मुखिया : ''नायक''
मुख्य देवता:
1. डूँगरदेव
2. वाघ देव
3. गम देव
4. भारी माता
5. कंसारी माता

3. डामोर : (डूँगरपुर)

- डूंगरपुर, बांसवाडा और उदयपुर में निवास करती है ।
- एकमात्र जनजाति जो वनों पर आश्रित नहीं है । खेती तथा पशुपालन करते है ।
- अपनी उत्पति राजपूतों से मानते है ।
- इनके मुखिया को ''मुखी'' कहा जाता है ।
- गांव को ''फलां'' कहा जाता है ।
- डूँगरपुर जिले में अधिकतर जनसंख्या निवास करती है ।
- सीमलवाडा पंचायत समिति (डूँगरपुर) को डामरिया क्षेत्र कहा जाता है ।
- डामोर पुरूष एक से अधिक विवाह (बहुविवाह) करते है ।

- वधू मूल्य को ''दापा'' कहा जाता है । (शादी के ऐवज में)
- डामोर पुरूष भी महिलाओं की भाँति गहने पहनते है ।
- डामोर जनजाति की भाषा पर गुजराती भाषा का प्रभाव पडता है ।
- होली के समय ''चाडिया कार्यक्रम'' किया जाता है ।

डामोर जनजाति के मेले :

1. छैला बावजी का मेला – पंचमहल (गुजरात)
2. म्यारस की ऐवडी का मेला – डूँगरपुर

- मुखिया को ''मुखी'' कहा जाता है ।

4. सांसी

- उत्पति सांसमल से मानी जाती है ।
- सबसे अधिक जनसंख्या भरतपुर और झुंझुनू जिले में है ।
- एकमात्र जनजाति जो विधवा विवाह नहीं करती ।
- सांसी जनजाति में 2 उपजाति होती है ।
  1. बीजा
  2. माला
- ''भाखर बावजी'' की कसम खाकर झूठ नहीं बोलते ।
- कूकडी रस्म : विवाह से पहले लडकी के चरित्र की परीक्षा लेते है ।
- सिकोदरी माता इनकी आराध्य देवी है ।

5. गरासिया

सिरोही के आबू, पिण्डवाडा
पाली के बाली → क्षेत्र में अधिक निवास करती है ।

- उदयपुर के गोगुन्दा
- घर घेर कहलाते है ।
- बिखरे गांव पाल कहलाते है ।
- एक ही गांव के फालिया कहलाते है ।
- नक्की झील इनका पवित्र स्थान है यहाँ अस्थियों का विसर्जन करते है ।
- होली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को 'चडिया' कहते है ।
- मृत्यु के 12 वें दिन दाह संस्कार करते है ।
- सफेद पशु व मोर को भी पवित्र मानते है ।

इनमें 3 प्रकार की पंचायत होती है ।

1. मोती न्यात ''बाबोर हाइया'' कहलाते है ।
2. नेनकी न्यात ''माडेरिया''
3. निचली न्यात

- इनमें प्रेम विवाह अधिक होते है । सियावा (सिरोही) गाँव के गणगौर मेले में
- झेला बावरी का मेला, म्यारसी की खाडी का मेला

विवाह के प्रकार

1. मोर बंधिया
2. ताणना (पैसे देकर लाना)
3. पहरावणा (कपडो के बदले)
4. मेलवो (मुकलावा करना)
5. खेवणो (शादी शुदा महिला अपने प्रेमीके साथ शादी करें)
6. सेवा

खेवणों : माला विवाह भी कहते है ।
सेवा : घर जवाई बनवाकर (शादी से पहले) काम करवाते है ।
गरासिया महिलाएँ सुन्दर तथा श्रृंगार प्रिय होती है ।
कुंआरी लडकिया लाख का चूडा पहनती है ।
शादी शुदा हाथी दांत का चूडा पहनती है ।
गरासिया पुरूष + भील महिला – भील गरासिया
गरासिया महिला +भील पुरूष – गमेती गरासिया
मुखिया : सहलोत / पालवी
गरासिया जनजाति की सहकारी संस्था –हेलरू
मृतक का स्मारक – हूरे इनकी स्थापना कार्तिक पूर्णिमा को की जाती है ।

- अनाज की कोठियां सोहरा कहलाती है ।
- मृत्यु भोज कांदिया, मेक या मेह ।
- सामूहिक कृषि थावरी या हारी कहलाई जाती है ।
- इनकी शगुन चीडी डुबकी है जिसकी मकर सक्रांति पर पूजा की जाती है ।

मेले :

1. कोटेश्वर मेला – अम्बाजी(गुजरात)
2. चेतर – विचितर मेला – देलवाडा (सिरोही)

6. सहरिया

निवास : किशनगंज, शाहबाद

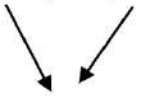

बारां

- भारत सरकार ने सहरिया जनजाति (राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति) को आदिम जनजाति का दर्जा दिया है ।
- राजस्थान सरकार मनरेगा में 100 दिन का अतिरिक्त रोजगार
  (अकाल में = 250 दिन)
- 3 प्रकार की पंचायत :
  पंचताई (पाँच गाँव की पंचायत)
  एकदसिया (11 गाँव की)
  चौरासी (84 गाँव की)
- चौरासी गाँव की पंचायत - वाल्मीकि मन्दिर (सीताबाडी) में
- सहरिया जनजाति वाल्मीकि को अपना आदिपुरूष मानती है ।
- सहरिया जनजाति में युगल नृत्य नहीं होता ।
- श्राद्ध नहीं करते
- महिलाऐं टैटू बनवाती है लेकिन पुरूष नहीं बनवा सकते
- दहेज प्रथा नहीं है।
- महिलाऐं घर में घूंघट करती है बाहर नहीं करती है ।
- कुल देवी - कोडिया माता
- तेजाजी व भैरूजी की भी पूजा करते है ।
- लठमार होली खेलते है ।
- मकर संक्रांति पर लकडी के डण्डों से लेंगी नामक खेल खेलते है ।
- दीपावली पर हीड गाते है ।
- वर्षा - ऋतु में आल्हा व लहंगी गाते है ।
- मुखियाः कोतवाल
- इनके गाँव को - सहरोल
- छोटी बस्ती को - सहराणा
- हार को - टापरी
- समान रखने की कोठरी को-कुसिला
- गाँव के बीच सामुदायिक केन्द्र होता है । जिसे ढालिया, हथाई, या बंगला कहते है ।
- पेडों पर घर बना कर रहते है ।
- पेडो पर बने घर को गोपना, टोपा, कोरूआ करते है ।
- "धारी संस्कार"(मृतक का) किया जाता है ।
- सहरिया महिलाएं गोदना गुदवाती है और पुरूषों मे मना है ।
- सहरियों में राय नृत्य प्रसिद्ध है ।
- सामूनी संस्था इनके विकास हेतु प्रयास ।

7. भील

- राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति
- द्वितीय सबसे बडी जनजाति
  - प्रथम मीणा
  - द्वितीय भील
  - तृतीय गरासिया
- उदयपुर जिले में अधिक
- भील शब्द की उत्पति बील तीर-कमान से हुई है ।
- भील जहाँ रहते है उसको भोमट कहते है ।
- इनके घर को - टापरा
- मोहल्ले को - फला
- गाँव को - पाल
- गाँव का मुखिया - पालवी / तदवी
- पूरी भील जनजाति का मुखिया - गमेती
- कुल देवता - टोटम
  (पेड - पौधों का टोटम का प्रतीक मानते है ।)
  पेड-पौधों को साक्षी मानकर विवाह कर लेते है । इसे "हाथीवेण्डो विवाह" कहते है ।
- भील पुरूष हाथीमना नृत्य करते है । (यह नृत्य बैठकर किया जाता है ।)
- होली के दूसरे दिन गैर नृत्य किया जाता है ।
- गौरी भीलों का प्रसिद्ध नृत्य है ।
- बाल-विवाह नहीं होता ।
- विवाह के समय दुल्हा ससुराल में "भराडी माता" विवाह की देवी का चित्र बनाता है ।
- तलाक -"छेडा फाडना"
- यदि कोई महिला अपने पति को छोडकर अन्य पुरूष के साथ रहने लग जाती है तो वह पुरूष उसके पहले पति को "झगडा राशि" देता है ।
- केसरिया नाथ जी की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते । विवाह पर हिचकी नृत्य करते है ।
- महुआ (पौधे) से बनी शराब पीते है ।
- स्थानान्तरित खेती करते है -"वालरा"
  1. पहाडी में - चिमाता
  2. समतल मैदान में - दजिया
- भीलों द्वारा सामुहिक कोई भी कार्य - "हेलमों"
- रणघोष - "फायरे-फायरे"
- यदि कोई भील किसी घुडसवार सैनिक को मार देता - "पाखरिया" (भील को)
- रक्त मूल्य - मौताणा (किसी के मरने पर)

मेले :

1. वेणेश्वर मेला – डूँगरपुर
2. घोटिया अम्बा मेला – बांसवाडा

भील पुरूष के कपडे :

ठेपाडा / ढेपाडा – तंग धोती
खोयतू – धोती (सामान्य)

भील महिला के कपडेः

कछाबू – महिला के कपडे
सिंदूरी – लाल रंग की साडी
पिरिया – पीले रंग की साडी (दुल्हन द्वारा)
परिजनी – पैरों में महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली मोटे कडे

8. मीणा

- राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति
- जयपुर जिले में सर्वाधिक

2 प्रकार

1. जमीदार मीणा
2. चौकीदार मीणा

- प्रमुख देवता : भूरिया बाबा/गोतमेश्वर, मीणा इनकी कभी झूठी कसम नहीं खाते हैं ।
- मीणाओं का सबसे पवित्र स्थान – रामेश्वर (स. माधोपुर)
- "बुझ देवता" मीणों के कुल देवता है ।
- "मोरनी मांडना" शादी के समय की रस्म
- राजस्थान की सर्वाधिक शिक्षित जनजाति
- बाल विवाह का प्रचलन (गोना)
- नाता प्रथा का प्रचलन
- पति पत्नि में तालाक को "छेडा फाडना" कहते है ।
- संकट पर चिल्लाने की आवाज को "कीकमारी" कहते है ।
- इनकी आराध्य देवी – बाण माता है ।

राजस्थान की चित्रकला

- चित्रकला प्रारम्भ – मध्य पाषण काल में
- भारत में स्वर्णकाल – जहाँगीर (1605–1627) का काल
  - ➢ भारत में चित्रकारी का पिता – रवि वर्मा (केरल)
  - ➢ इन्होंने प्रताप का चित्र बनाया ।
- राजस्थानी चित्रकला के जनक – कुन्दन लाल मिस्त्री
- राजस्थान मे चित्रकला का प्रारम्भ – 15 वीं सदी
- राजस्थान मे चित्रकला का स्वर्णकाल – 17–18 वीं सदी माना जाता है ।
- राजस्थानी चित्रकला का उद्भव 'अपभ्रंश शैली' से हुआ है ।
- राजस्थानी चित्रशैली का नाम सर्वप्रथम रामकृष्णदास ने दिया ।

1916 में "आनन्द कुमार स्वामी" ने राजपूत पेंटिंग्स नाम से पुस्तक लिखी तथा राजस्थान + पहाडी चित्रकला को संयुक्त रूप से राजपूत चित्रशैली कहा ।
"रायकृष्ण दास" ने इसे "राजस्थानी चित्रकला" नाम दिया था ।
राजस्थान में प्राचीन चित्रित ग्रंथ जिन भद्रसूरी भंडार जैसलमेर में सुरक्षित है जो 1060 ई. के है ।

1. ओघ नियुक्ति वृति
2. दस वैकालिक सूत्र चूर्णी

राजस्थान की चित्रकला को भौगोलिक व सांस्कृतिक रूप से 4 भागों में बाँटा गया ।

1. मेवाड – नाथद्वारा, देवगढ
2. मारवाड – जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ, नागौर, अजमेर, जैसलमेर
3. ढुढाँड – आमेर/जयपुर, अलवर, उणियारा (टोंक), शेखावाटी
4. हाडौती – बून्दी, कोटा

प्रमुख संग्रहालय

1. पोथीखाना – जयपुर
2. जैन भण्डार – जैसलमेर
3. पुस्तक प्रकाष – जोधपुर

चित्रकला की संस्थाएँ

1. कालावृत – जयपुर
2. आयाम – जयपुर
3. जवाहर कला केन्द्र – जयपुर
4. पैग – जयपुर
5. राजस्थान ललित कला अकादमी – जयपुर
6. चितेरा – जोधपुर
7. घोरा – जोधपुर